खेती के साथ पशुपालन से मनीष को मिली नई पहचान

पशुपालक का नाम	:	श्री मनीष गुर्जर
पिता का नाम	:	श्री रामलाल गुर्जर
उम्र	:	24 वर्ष
पता	:	रानीखेड़ा, निंबाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
शिक्षा	:	बीबीए
मोबाईल नं.	:	8769707676, 7014817814

संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी से त्रस्त है, लेकिन निंबाहेड़ा तहसील के रानीखेड़ा गांव के मनीष गुर्जर ने कृषि एवं पशुपालन के उचित सामंजस्य से अच्छी आजीविका अर्जित करके अपने परिवार का समुचित पालन–पोषण करके समृद्ध जीवन सुनिश्चित कर अपनी सूझबूझ का परिचय दिया है। इन्होंने खेती के साथ–साथ गाय–भैंस पालन करके अपने आप को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद बेरोजगारी की स्थिति में खेती और पशुपालन को रोजगार के लिए चुना, जिसमें शुरूआत के दिनों में काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा। मनीष गुर्जर ने अपनी 24 बीघा जमीन, 3 गिर नस्ल की गायें व 5 भैंसों से अपना व्यवसाय शुरू किया। जानकारी के अभाव में कई बार आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ा फिर भी अपनी कड़ी मेहनत और लगन से पशुपालन की ओर ध्यान केंद्रित रखा। वर्तमान में इनके पास 19 गिर नस्ल की गायें, 8 भैंसें, 20 बछड़े–बछड़ियां हैं। गाय–भैंसों का दूध बेचकर व गोबर विक्रय कर आय अर्जित करते हैं। गोबर का उपयोग अपनी खेती में कर रासायनिक खाद की मात्रा व लागत को कम करने में सफलता पाई है। अब जैविक खेती पर ध्यान दे रहे हैं। मनीष गुर्जर प्रतिमाह लगभग 2,25,000 से 2,50,000 रूपए का दूध विक्रय कर रहे हैं तथा वैज्ञानिक तौर–तरीकों से पशुपालन करने के लिए समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, बोजून्दा के पशुपालन विशेषज्ञों से सलाह लेकर लाभ अर्जित कर रहे हैं। मनीष गुर्जर ने नई तकनीकों को उपयोग में लाकर आस–पास के गांवों में एक सफल कृषक एवं पशुपालक के रूप में विशिष्ट पहचान बनाई है।

पशुधन व जैविक खेती से दिलीप सिंह की आय हुई दुगुनी

पशुपालक का नाम	:	श्री दिलीप सिंह राजावत
पिता का नाम	:	श्री तेज सिंह राजावत
उम्र	:	48 वर्ष
पता	:	कसमोर, चित्तौड़गढ़
शिक्षा	:	9वीं पास
मोबाईल नं.	:	9079818280

वर्तमान में पशुपालन व खेती समय की जरूरत है क्योंकि इसके साझे प्रयासों से ही किसान अपनी आय को दुगुनी कर सकते हैं। इसका उदाहरण बने हैं कसमोर गांव के दिलीप सिंह राजावत, जिन्होंने वैज्ञानिक पशुपालन व नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशुधन उत्पादन को बढ़ाने में सफलता पाई है। दिलीप सिंह शुरू में केवल घर की जरूरतों के अनुसार पशुपालन करते थे, लेकिन परिवार में बढ़ते खर्चों और बेरोजगारी के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। इस परिस्थिति में दिलीप सिंह को खेती के साथ–साथ पशुपालन को मजबूत करना ही उचित लगा और काम शुरू कर दिया। पशु विज्ञान केन्द्र, बोजून्दा द्वारा आयोजित किए गए प्रशिक्षण शिविरों और ऑनलाइन प्रशिक्षणों के माध्यम से पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विशेषज्ञों के संपर्क में आए तथा कृमिनाशक दवा का उपयोग व खनिज लवणों की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार, जैविक खेती आदि के महत्व को समझकर प्रयोग में लाकर परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। वर्तमान में दिलीप सिंह के पास 9 बीघा कृषि भूमि के साथ 7 गाय, जर्मन शैफर्ड श्वान, 25 खरगोश और 6 बतखें हैं। गायों से लगभग 30 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है, जिसे विक्रय कर लगभग 25 हजार प्रतिमाह आय अर्जित कर रहे हैं। दिलीप सिंह ने पशुओं से मिलने वाली गोबर की खाद से वर्मीकम्पोस्ट बनाकर खेत में उपयोग कर रासायनिक खाद की निर्भरता को कम किया है। दिलीप सिंह अब परिवार के साथ काफी खुश हैं। वे अपनी सफलता का श्रेय अपनी मेहनत, परिवार और पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा को देते हैं।

बकरी पालन से रणजीत सिंह की हुई बल्ले-बल्ले

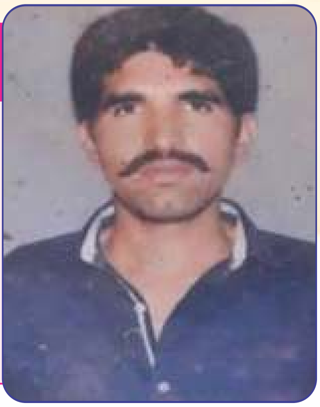

पशुपालक का नाम	:	श्री रणजीत सिंह सोलंकी
पिता का नाम	:	श्री बहादुर सिंह
उम्र	:	40 वर्ष
पता	:	डोरिया, निंबाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
शिक्षा	:	9वीं पास
मोबाईल नं.	:	9358696516

कोरोना महामारी के कारण वर्तमान में शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के नवयुवकों तथा किसानों को बेरोजगारी की समस्या से जूझना पड़ा है, ऐसे समय में पशुपालन का धंधा तुरंत स्वरोजगार की अपार संभावना वाला साबित हुआ। चित्तौड़गढ़ में पहाड़ी क्षेत्र की अधिकता व पानी की कमी के कारण बकरी पालन को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि इससे अधिक आय मिलती है तथा गाय–भैंस की तुलना में चारा व खाद्य सामग्री की भी कम आवश्यकता होती है। चित्तौड़गढ़ जिले के ग्राम डोरिया के प्रगतिशील व जागरूक पशुपालक रणजीत सिंह ने कृषि के साथ–साथ बकरी पालन को अपनी आय का साधन बनाया। रणजीत सिंह के पास पांच बीघा जमीन है जिसमें पानी की व्यवस्था नहीं होने के कारण आय कम होती थी। इसके चलते उन्होंने बकरी पालन को अपनाया। वर्तमान में रणजीत सिंह के पास 33 बकरियां और 3 गाय हैं। बकरियों से उन्हें प्रतिदिन लगभग 3–4 लीटर दूध प्राप्त हो रहा है जिसे घर में उपयोग कर रहे हैं तथा गायों से प्राप्त लगभग 10 लीटर दूध को 40 रूपए प्रति लीटर बेचकर आय प्राप्त करते हैं। नर व मादा बकरियों के विक्रय से लगभग एक लाख रूपए तक आय प्राप्त करते हैं तथा अपने परिवार का पालन–पोषण कर रहे हैं। इस प्रकार ये लगभग 2 लाख रुपये सालाना अर्जित कर रहे है। रणजीत सिंह उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पिछले तीन वर्षों से पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में शामिल हो रहे हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग व खनिज लवणों की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की जिससे उनकी बकरियां स्वस्थ हैं। वैज्ञानिक तरीकों से बकरी पालन करने हेतु अब रणजीत सिंह नस्ल सुधार की ओर ध्यान दे रहे हैं। वे सिरोही नस्ल की बकरियों को बढ़ावा दे रहे हैं। रणजीत सिंह इस सफलता का श्रेय परिवारजनों व पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा को देते हैं।

चेतन को पशुपालन से मिली एक नई चेतना

पशुपालक का नाम	:	श्री चेतन कुमावत
पिता का नाम	:	श्री राजमल कुमावत
उम्र	:	22 वर्ष
पता	:	खेरी, चित्तौड़गढ़
शिक्षा	:	बी. एससी
मोबाईल नं.	:	9950047080

खेरी गांव के चेतन कुमावत ने गाय–भैंस पालन के द्वारा अपने आपको आर्थिक रूप से सशक्त बनाया। शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ने के बावजूद पारंपरिक कृषि के साथ पशुपालन को अपनाकर चेतन ने दूरदर्शिता का परिचय दिया। चेतन के पास 12 बीघा कृषि भूमि के साथ 6 गाय, 3 भैंसें, 7 बछड़ियां हैं। गाय–भैंसों से चेतन को 20 से 22 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है जिसे विक्रय कर लगभग 2.50 लाख की वार्षिक आय प्राप्त करते हैं और परिवार के पालन में अहम भूमिका निभाते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा आयोजित किए गए प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से चेतन ने अपनी सोच बदली और वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन को बढ़ावा दिया। जिससे चेतन को दूध उत्पादन बढ़ाने व पशुओं को स्वस्थ बनाए रखने में सफलता मिली है। इससे उत्साहित होकर नस्ल सुधार व गोबर से केंचुआ खाद तैयार करने पर ध्यान दे रहे हैं। चेतन अपनी सफलता से उत्साहित होकर गांव के अन्य किसानों को भी जागरूक कर रहे हैं। वे प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर, कृमिनाशक दवा का उपयोग व खनिज लवणों की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी लेकर अपना व्यवसाय करते हैं तथा अन्य किसानों को भी प्रेरित कर रहे हैं। चेतन ने अपने आपको समाज के सामने एक मेहनती और जागरूक पशुपालक के रूप में स्थापित किया है।

परिवार पालन का आर्थिक आधार बना बकरी पालन

पशुपालक का नाम	:	श्री किशन लाल मेघवाल
पिता का नाम	:	श्री मांगीलाल मेघवाल
उम्र	:	32 वर्ष
पता	:	कंथारिया, चित्तौड़गढ़
शिक्षा	:	10वीं पास
मोबाईल नं.	:	9929255371

किशन लाल मेघवाल निवासी कंथारिया तहसील, चित्तौड़गढ़ जिला–चित्तौड़गढ़ एक बकरी पालक हैं, जिन्होंने अपने पास कृषि भूमि की कमी में बकरी पालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया और पूरी तरह बकरी पालन पर आश्रित रहे। अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उन्होंने 7 बकरियों से व्यवसाय शुरू किया और धीरे–धीरे बकरियों की संख्या तो बढ़ने लगी परंतु जानकारी के अभाव में बकरी पालन सही तरीके से आगे नहीं बढ़ पाया। इसके बाद किशन लाल का सम्पर्क पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा में पशुपालकों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण में पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विशेषज्ञों से हुआ। इसके बाद किशन ने पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा में बकरी फार्म में बकरियों का रख–रखाव व खान–पान के बारे में जानकारी ली। उन्नत तकनीकों की जानकारी के अनुसार बकरियों की देखभाल शुरू की तथा नस्ल सुधार हेतु बकरियों के ताव में आने पर पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा में उपलब्ध सिरोही बकरे से ग्याभिन करवाते रहे। वर्तमान में किशन लाल के पास करीब 40 बकरे–बकरियां हैं तथा वे 60–65 बकरे–बकरियां बेच चुके हैं और इससे प्राप्त सालाना 1.25 लाख रुपये की आय से परिवार के पालन का जरिया बनाया है। किशन लाल समय–समय पर बकरी पालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा में आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेते हैं, जिससे उन्हें काफी फायदा हुआ है। कृमिनाशक दवा का उपयोग व खनिज लवणों की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार के उपयोग से उनकी बकरियों में स्वास्थ्य संबंधित सुधार हुए है। इस बकरी पालन से किशन काफी उत्साहित हैं तथा अन्य किसानों को भी बकरी पालन की सफलता की बात बताते हैं। किशन अपनी सफलता का श्रेय परिवारजनों व पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा को देते हैं।